लोकप्रशासन के विकास का चरण :

लोक प्रशासन उतना ही पुराना है जितना कि मानव इतिहास. राज्य उतना ही पुराना है जितना कि इतिहास
लोकप्रशासन उतना ही पुराना है जितना कि राज्य। प्लेटो का "रिपब्लिक", अरस्तू की पालटिक्स
कौटिल्य का "अर्थशास्त्र" मैकियावली का "प्रिंस" (1513) आदि में लोकप्रशासन का
पाया जाता है। 1812 में फ्रांस में चार्ल्स जिन बोनिन ने "principle'd administration
Publeqeue" की रचना की जिसे लोकप्रशासन के क्षेत्र में पृथक ग्रंथ माना जाता है।

पीटर सेल्फ का मानना है कि राजनीति विज्ञान या सार्वजनिक विधि के रूप में लोक
प्रशासन के अध्ययन की शुरुआत हुई। कुछ समय पूर्व तक शैक्षणिक विषय के रूप में
इन पुराने विषयों की स्पष्ट रूप से सौतेली बहन थी।

अध्ययन के विषय-वस्तु के रूप में लोकप्रशासन का विकास पाँच चरणों से होकर गुजरता है।
विकास का प्रत्येक चरण लोकस या फोकस से स्वयं को सम्बद्ध करता है। जहाँ लोकस का
अर्थ विषय की विशिष्टता को दर्शाता है जिसमें "क्या" शब्द पर विशेष बल देता है। फोकस "कहाँ" शब्द पर विशेष बल देता है। गोलम्ब्यू की
का मानना है कि लोकप्रशासन को लोकस या फोकस के संदर्भ में समझा जा सकता है।
समय के आधार पर यदि लोकप्रशासन के विकास को 6: वर्गों में बाटा जा सकता है। परन्तु
निकोलस हेनरी ने समय और बदलती प्रकृति के आधार पर सम्पूर्ण विकास को पाँच चरण
में वर्गीकृत किया है।—

1 – 1887 — 1926 (प्रशासन - राजनीति द्वैतभाव)
2 – 1927 — 1937 (प्रशासन के सिद्धान्त पर बल)
3 – 1938 — 1947 (प्रशासनिक सिद्धान्तों को चुनौती)
4 – 1948 — 1970 (अन्तः - अनुशासनात्मक अध्ययन पर जोर)
5 – 1971 — 1990 (नवीन लोकप्रशासन)
6 – 1991 — अब तक (ग्लोबलाइजेशन का दौर)

विकास का प्रथम चरण : (1887 – 1926)

एक विषय के रूप में लोक प्रशासन का जन्म 1887 ई में वुडरो विल्सन के उस लेख से होता है जिसका
शीर्षक "The study of administration" था। प्रिंस्टन विश्व विद्यालय के प्रोफेसर एवं
अमेरिका के राष्ट्रपति (1913) वुडरो विल्सन को इस शास्त्र का जन्मदाता माना जाता है।
वुडरो विल्सन (woodrow willson) ने "The study of admenistration" के माध्यम से
लोकप्रशासन को राजनीति से पृथक माना और कहा कि जिस प्रकार एक संविधान
का निर्माण करना सरल है परन्तु उसे "चलाना" कठिन कार्य है। उसने "चलाने" के
क्षेत्र को प्रशासन माना।

1900 ई में अमेरिकन विद्वान Frank J. Goodnow ने अपनी
महत्वपूर्ण पुस्तक "Politics and Administration" में राजनीति और प्रशासन को
अलग - अलग माना।

तृतीय चरण (1938-1947)

1938 से 1947 का काल एक प्रतिक्रिया के साथ शुरू होता है। 1938 में चेस्टर बर्नार्ड की पुस्तक "The fucations of excutive" प्रकाशित हुई। जिसमें प्रशासन के किसी सिद्धान्त का वर्णन नहीं किया गया। एक साल बाद हर्बर्ट साइमन ने अपनी पुस्तक "Administrative Behaviours" में लिखा कि प्रशासन में सिद्धान्त नाम की कोई चीज है। सन् 1947 में रॉबर्ट डहल (Robert Dahl) ने अपने निबंध "Science of Public administration: Three problems में यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया कि लोक प्रशासन विज्ञान नहीं है और इसको सिद्धान्त की खोज में मुख्यतः तीन बाधाओं का सामना करना पड़ता है। —

प्रथम — विज्ञान मूल्य शून्य होता है जबकि प्रशासन मूल्य-बहुल है।

द्वितीय — मनुष्यों के व्यक्तित्व समान नहीं होते फलस्वरूप प्रशासन के कार्यों में विभिन्नता आ जाती है।

तृतीय → समाजिक ढाँचा भी एक बाधा है जहाँ से लोक प्रशासन पनपता है

चतुर्थ चरण (1948-1970)

यह चरण क्रांतिकारी या "संकट का काल" रहा। लोक प्रशासन जिन उपलब्धियों का गीत गा रहा था वह सभी को बेकार ठहरा दिया गया। 1948-1970 के काल "Crisis of Identity" का युग कहा गया। इस युग में मोटे तौर पर दो रास्ते अपनाए गए —

प्रथम — कुछ विद्वान राजनीतिशास्त्र के अंतर्गत आ गये

द्वितीय — लोक प्रशासन के विकल्प की खोज

जो विद्वान राजनीतिशास्त्र के अंतर्गत आ गये इनका तर्क था कि राजनीतिशास्त्र से निकला हुआ विषय लोकप्रशासन है और वह उसी का अंग है। लोक प्रशासन के विकल्प की खोज करने वाले विद्वानों ने - प्रशासनिक विज्ञान (Administrative Science) की खोज की। लोकप्रशासन, व्यापार प्रबंध (Business Administration) आदि ने मिलकर प्रशासनिक विज्ञान की नींव डाली।

पञ्चम-चरण: (1971 - अब तक)

तमाम आलोचनाओं, प्रत्यालोचनाओं और चुनौतियों ने कुल मिलाकर लोकप्रशासन को एक स्वतंत्र विषय के रूप में, आत्म-विश्वास के साथ अपनी पहचान बनाने के लिए प्रेरित किया। नए-नए दृष्टिकोण का विकास हुआ। लोकप्रशासन में सभी पुराने विषयों के विद्वान और अध्येयता इसके बद-चढ़ का भाग लेने में अपनी उत्सुकता दिखाई। जिससे लोक प्रशासन का वैज्ञानिक स्वरूप उभरकर सामने आया। इसके साथ-साथ इनका क्षेत्र विस्तार भी हुआ। तुलनात्मक लोक प्रशासन, (Comparative Public administration) Development Administration का प्रादुर्भाव हुआ।

समय के आधार पर विकास का चरण: षष्ठम-चरण (1991 - वर्तमान तक)

विश्व बैंक द्वारा 1988 में उपसहारा क्षेत्र में किए गए सर्वेक्षण, सोवियत यूनियन के पतन विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के आर्थिक दृष्टिकोण के प्रभाव से प्रभावित होकर 1991 में लोकप्रशासन बाजारी अर्थव्यवस्था की ओर उन्मुख हुआ। उदारवाद, वैश्वीकरण, नव लोकप्रशासन, अच्छा अभिशासन इत्यादि नवीन अवधारणाएँ लोक प्रशासन के नए विषय-वस्तु के रूप में उभरे। लोक प्रशासन में लोक चयन विचार के नवीनतम रूप "New right school of Thought" Roll back state (प्रश्न-वेलन रूप), तृतीय दल सरकार जैसी अवधारणाओं का आरम्भ हुआ।